अध्याय
14

विभाजन को समझना

सीखने के प्रतिफल-

1. इस अध्याय में विधार्थी भारत का विभाजन किस तरह से हुआ को सीखेंगे।

परिचय

- इस अध्याय में हम 1947 के बंटवारे का अध्ययन करेंगे
- हमें पता है कि 1947 में हमारी आजादी से जुड़ी खुशियां विभाजन की हिंसा और बर्बरता से बदरंग पड़ गई थी
- ब्रिटिश भारत की दो संप्रभु राज्य भारत और पाकिस्तान में 1947 की बंटवारे से कई आकस्मिक परिवर्तन आए।
- लाखों जाने गई, कईयों की जिंदगियां पलक झपकते बदल गई, शहर बदले, भारत बदला, एक नए देश का उदय हुआ और ऐसा नरसंहार, हिंसा एवं विस्थापन हुआ इसका इतिहास में पहले उदाहरण न था।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

बंटवारा या महाध्वंस

- बंटवारे में कई लाख लोग मारे गए और कई लोग बेघर हो गए। औरतों के साथ बलात्कार और अपहरण किया गया।
- करोड़ों लोग रातों-रात एक अनजान देश में शरणार्थी बन गए। विद्वानों के अनुसार इस विभाजन के दौरान मरने वालों की संख्या लगभग **200000** से **500000** थी।
- इस विभाजन ने अपनों को अपनों से अलग कर दिया और अपने देश से लोगों को पराए देश जाना पड़ा। इस विभाजन को 16 माह का गृह युद्ध भी कहा गया।
- 1947 के इस विभाजन को जिंदा बचे लोगों ने कई शब्दों में व्यक्त किया जैसे मार्शल लॉ, मारामारी और रोला या हुल्लड़ नाम दिया।
- विभाजन के दौरान हुई हत्याओं, बलात्कार, आगजनी और लूटपाट की बातें करते हुए विद्वानों ने इसे महाध्वंस (होलोकास्ट) शब्द का उल्लेख किया है।
- यहूदी नरसंहार, जिसे दुनियाभर में **होलोकॉस्ट** के नाम से जाना जाता है, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यूरोपी यहूदियों का नाज़ी जर्मनी द्वारा किया गया एक जाति-संहार था। नाज़ी जर्मनी और इसके सहयोगियों ने तक़रीबन साठ लाख यहूदियों की सुनियोजित तरीक़े से हत्या कर दी।

© JCERT not to be republished

रूढ छवियों की ताकत

- भारत में पाकिस्तान से नफरत करने वाले और पाकिस्तान में भारत से नफरत करने वाले दोनों ही बंटवारे की उपज है।
- कई लोगों को लगता था कि मुसलमान क्रूर कट्टर, गंदे और हमलावर के वंशज है। जबकि हिंदू दयालु, उदार, शुद्ध और जिन पर हमला किया गया है उनके वंशज है।
- पाकिस्तान में भी भारतीयों के लिए।

  इस तरह की रूढ़ छवि थी। पाकिस्तानियों को लगता था कि मुसलमान निष्पक्ष,बहादुर,एकेश्वरवादी और मांसाहारी होते हैं। और हिंदू काले, कायर, बहु ईश्वरवादी, और शाकाहारी होते हैं।
- यह छवियां 1947 के विभाजन में अपना महत्वपूर्ण योगदान अदा कर रही थी। विभाजन ने ऐसी स्मृतियां, घृणाए, छवियां और पहचाने रच दी कि आज भी दोनों मुल्कों में नफरत की आग जल रही है।

विभाजन क्यों और कैसे हुआ

मोहम्मद अली जिन्ना की दो राष्ट्र की मांग।

अंग्रेजों द्वारा फूट डालो राज करो की नीति।

हिंदू और मुसलमानों के बीच **सांप्रदायिक दंगे—**सांप्रदायिकता से तात्पर्य उस संकीर्ण मनोवृत्ति से है, जो धर्म और जाति के नाम पर पूरे समाज तथा राष्ट्र के व्यापक हितों के विरुद्ध व्यक्ति को केवल अपने व्यक्तिगत धार्मिक हितों को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें संरक्षण देने की भावना को महत्त्व देती है। तथा आपस में झगड़ा पैदा करती है।

1905 का बंगाल विभाजन (divide and rule)

1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना:-

1906 में ब्रिटिश भारत के दौरान ढाका (वर्तमान में बांग्लादेश) में ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना हुई थी। लीग में आगा खां, ख्वाज़ा सलीमुल्लाह और मोहम्मद अली जिन्ना समेत कई नेता शामिल थे।

हिंदुओं के बहुमत के शासन स्थापित हो जाने के डर तथा अंग्रेजों की "बांटो और राज करो की नीति" के कारण इस लीग की स्थापना हुई।

इसकी स्थापना का श्रेय मुसलमान के एक नेता आगां खान को जाता है।

पाकिस्तान का नाम :-

पाकिस्तान अथवा पाक - स्तान (पंजाब, अफगान, कश्मीर, सिंध और बलूचिस्तान) यह नाम कैंब्रिज में पढ़ रहे एक पंजाबी मुसलमान छात्र "चौधरी रहमत अली" ने 1933 और 1935 में दिया था।

रहमत अली इस नई इकाई के लिए अलग राष्ट्रीय हैसियत चाहता था।

1930 के दशक में किसी ने रहमत अली की बात को गंभीरता से नहीं लिया यहां तक कि मुस्लिम लीग और अन्य मुस्लिम नेताओं ने भी उसकी इस विचार को केवल एक छात्र का सपना समझकर खारिज कर दिया।

© JCERT not to be republished

1937 का प्रांतीय चुनाव:-

1937 में पहली बार चुनाव करवाए गए, इस चुनाव में 10 से 12 प्रतिशत लोगों के पास ही मताधिकार था।

11 में से 5 प्रांतों में कांग्रेस ने पूर्ण बहुमत हासिल किया और 7 प्रांतों में सरकार बनाई।

इस चुनाव में मुस्लिम लीग का प्रदर्शन बहुत खराब था।

मुस्लिम लीग को उत्तर पश्चिम सीमा में एक भी सीट नहीं मिली और पंजाब में 84 आरक्षित सीट में से केवल 2 ही सीट मिली और सिंध में 33 में से 3 सीट ही मिल पाई।

संयुक्त प्रांत (वर्तमान में उत्तर प्रदेश) में मुस्लिम लीग गठबंधन करना चाहती थी परंतु बहुमत होने की वजह से कांग्रेस ने मना कर दिया।

इससे मुस्लिम लीग को लगने लगा कि हमें कभी भी भारत में राजनीतिक सत्ता नहीं मिल पाएगी।

मुस्लिम लीग संयुक्त प्रांत, बंबई और मद्रास में लोकप्रिय थी परंतु बंगाल में कमजोर थी।

उत्तर पश्चिम और पंजाब में ना के बराबर मुस्लिम लीग के पास सीट थी वही सिंध में लीग ने सरकार ही नहीं बना पाई।

© JCERT not to be republished

पाकिस्तान का प्रस्ताव :

* पाकिस्तान की स्थापना की मांग धीरे-धीरे ठोस रूप ले रही थी। **23 मार्च 1940 को मुस्लिम लीग** ने एक अलग राष्ट्र की मांग की परंतु उस समय प्रस्ताव में कहीं भी विभाजन या पाकिस्तान का जिक्र नहीं था।

प्रस्ताव को लिखने वाले पंजाब के प्रधानमंत्री और यूनियनिस्ट पार्टी के नेता **सिकंदर हयात खान** ने पंजाब असेंबली को संबोधित करते हुए ऐलान किया था कि

हम ऐसे पाकिस्तान की अवधारणा का विरोध करते हैं जिसमें "यहां मुस्लिम राज और बाकी हिंदू राज होगा। अगर पाकिस्तान का मतलब यह है कि पंजाब में खालिस मुस्लिम राज कायम होने वाला है तो मेरा उससे कोई वास्ता नहीं है।

कुछ लोगों का मानना था कि पाकिस्तान के गठन की मांग उर्दू कवि मोहम्मद इकबाल से शुरू होती है। **जिन्होंने "सारे जहां से अच्छा हिंदुस्ता हमारा लिखा था"।**

कैबिनेट मिशन:-

भारत का राजनीतिक रुप रेखा तय करने के लिए **मार्च 1946** में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने भारत में एक तीन सदस्यीय उच्च-स्तरीय शिष्टमंडल भेजा।

इस शिष्टमंडल में ब्रिटिश कैबिनेट के तीन सदस्य- **लार्ड पैथिक लारेंस(अध्यक्ष), सर स्टेफर्ड क्रिप्स तथा ए. वीं. अलेक्जेंडर** थे। इस प्रतिनिधिमंडल को कैबिनेट मिशन के नाम से जाना जाता है।

कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार 1946 में दोबारा प्रांतीय चुनाव हुआ। जिसमें कांग्रेस पार्टी को सामान्य सीटों पर एक तरफा सफलता मिली।

जबकि मुस्लिम लीग को उसके मुस्लिम आरक्षित सीटों पर ही जीत मिली वह भी पूर्ण सीटों पर नहीं।

अतः मुस्लिम लीग ने अलग पाकिस्तान राष्ट्र की मांग को मजबूत किया और प्रत्यक्ष कार्यवाही आंदोलन चलाया।

प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस :

सीधी कार्यवाही दिवस (**direct action day**) अथवा प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग द्वारा अलग मुस्लिम राष्ट्र के लिए चलाया जाने वाला हिंसक आंदोलन था।

इसका उद्देश्य हिंदू-मुस्लिम दंगे उत्पन्न करके यह सिद्ध करना था कि हिंदू और मुस्लिम समुदाय एक साथ नहीं रह सकते।

कानून व्यवस्था का नाश

- मार्च 1947 से तकरीबन साल भर तक रक्तपात चलता रहा। इसका कारण शासन की संस्थाओं का बिखरना था।
- बहावलपुर (पाकिस्तान) मैं तैनात एक **पेडेरल मून नाम के अफसर** लिखते हैं कि, अमृतसर में इतनी मारकाट होने के बावजूद भी कोई पुलिस गोली नहीं चला रही थी।
- साल के आखिर तक कानून व्यवस्था का नाश हो चुका था और अंग्रेजों को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें? और वह इस दंगे में हस्तक्षेप भी नहीं करना चाह रहे थे।
- जब लोगों ने मदद के लिए अंग्रेजों से गुहार लगाई तो अंग्रेजों ने लोगों को गांधी जी, नेहरु जी, पटेल जी, और मोहम्मद अली जिन्ना, के पास जाने को कहा।
- हिंसा इसलिए भी बढ़ गई क्योंकि भारतीय सिपाही और पुलिस वाले भी हिंदू - मुसलमान में भेद करने लगे और एक- दूसरे समुदाय पर हमला कर रहे थे।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

महात्मा गांधी एक अकेली फौज

- इस हिंसा को रोकने के लिए एक बार फिर महात्मा गांधी ने जीवनपर्यंत सिद्धांत को अपनाया।
- वे पू र्वी बंगाल के नोआखली(बांग्लादेश) से बिहार के गांव में और उसके बाद कोलकाता दिल्ली की यात्रा पर निकल गए।
- वहां जाकर उन्होंने हिंदू -मुसलमान को समझाया कि आपस में दंगे -फसाद ना करें भाईचारा बनाकर रखें।
- जब वह दिल्ली गए थे तो उन्होंने वहां देखा कि दिल्ली की दिल कहे जाने वाली चांदनी चौक में एक भी मुसलमान नहीं था।
- उन्हें यह सब देख कर बहुत बुरा लगा और उन्होंने पंजाब असेंबली के एक सभा में दुख प्रकट किया।
- जब मुसलमानों को शहर से बाहर खदेड़ने लगे तो गांधीजी अनशन पर बैठ गए और उनका साथ देने के लिए कुछ मुसलमान और कुछ हिंदू भी अनशन करने लगे।
- मौलाना आजाद लिखते हैं कि "इस अनशन का असर आसमान की बिजली जैसा रहा।"
- और दंगे रुक गए और दिल्ली के बहुत सारे मुसलमानों ने कहा "दुनिया सच्चाई की राह पर आ गई थी।"

बंटवारे में औरतें

- औरतों के साथ बहुत गंदा व्यवहार हुआ। उनको अगवा किया गया। उनकी खरीद- बिक्री की गई।
- अनजान लोगों के साथ एक नई जिंदगी शुरुआत करने के लिए उन्हें मजबूर किया गया।
- औरतों के बारे में कुछ भी फैसले लिए जाते थे तो उनसे एक बार भी सलाह नहीं ली जाती थी।
- एक अंग्रेज रिपोर्ट के मुताबिक 30 हजार औरतों को बरामद किया गया।
- इनमें 22000 मुस्लिम औरतों को भारत से और 8000 हिंदू व सिख औरतों को पाकिस्तान से निकाला गया।
- यह मुहिम 1954 में जाकर खत्म हुई।

© JCERT not to be republished

क्षेत्रीय विविधताएं

- कलकत्ता और नोआखली में 1946 में जनसंहार हो चुका था। लेकिन सबसे ज्यादा विनाश और दंगे पंजाब में हुए थे।
- पश्चिम पंजाब से सभी हिंदुओं और सिखों को भारत की तरफ और सभी पंजाबी भाषी मुसलमानों को पाकिस्तान की ओर भेज दिया गया।
- यह सब 1946 से 1948 के बीच हुआ।
- यूपी-बिहार, मध्य प्रदेश और हैदराबाद के अधिकतर परिवार 1950 के दशक में ही पाकिस्तान में जाकर बसने लगे लेकिन कुछ भारत में ही रहने का फैसला किया।
- पाकिस्तान गए उर्दू भाषी लोग को **मुहाजिर (अप्रवासी)** कहा जाता है। बंगाल में भी यह पलायन लंबे समय तक चलता रहा।
- बंगाल में धर्म के आधार पर आबादी का बंटवारा किया गया लेकिन फिर भी बहुत सारे मुसलमान पश्चिम बंगाल में ही रह गए।
- बंगाली मुसलमानों ने **द्विराष्ट्र सिद्धांत** को नकारते हुए **1971-72** में बांग्लादेश की स्थापना की।

स्मरणीय तथ्य

- 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन सूरत में हुआ जिसमें कांग्रेस पार्टी गरम दल और नरम दल नामक दो दलों में बंट गयी। इसी को सूरत विभाजन कहते हैं। इस अधिवेशन की अध्यक्षता रास बिहारी घोष ने की थी।
- दिसंबर 1916 में लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस पार्टी और मुस्लिम लीग के बीच एक समझौता हुआ। इस समझौते के तहत कांग्रेस ने पृथक चुनाव क्षेत्रों को स् वींकारा। इसे लखनऊ समझौता के नाम से जाना जाता है।
- हिंदू महासभा की स्थापना 1915 में हुई। यह एक हिंदू पार्टी थी जो कमोबेश उत्तर भारत तक सीमित रही। यह पार्टी हिंदुओं के बीच जाति एवं संप्रदाय के फ़र्कों को खत्म कर हिंदू समाज में एकता पैदा करने की कोशिश करती थी। हिंदू महासभा, हिंदू अस्मिता को मुस्लिम अस्मिता के विरोध में परिभाषित करने का प्रयास करती थी।
- भारत छोड़ो आन्दोलन, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 8 अगस्त 1942 को आरम्भ किया गया था। इस आंदोलन का लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना था। यह आंदोलन महात्मा गांधी द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुम्बई अधिवेशन में शुरू किया गया था। जिसमें महात्मा गांधी ने करो या मरो का नारा दिया था।
- महात्मा गांधी को वन मैन आर्मी और अब्दुल गफ्फार खान को सीमांत गांधी के नाम से जाना जाता है।
- महात्मा गांधी और उत्तर पश्चिम सीमा अपराध के नेता खान अब्दुल गफ्फार खान ने भारत विभाजन का अंत तक विरोध किया था। महात्मा गांधी ने यह भी ऐलान कर दिया था कि," **चाहे समस्त भारत को आग लग जाए तब भी पाकिस्तान नहीं बनेगा पाकिस्तान मेरे शव पर ही बनेगा**"।
- लॉर्ड माउंटबेटन योजना के अनुसार 14 अगस्त 1947 में पाकिस्तान एवं 15 अगस्त 1947 में भारत को स्वतंत्र घोषित कर दिया गया।

© JCERT not to be republished

अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नः-

1. मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए पृथक राष्ट्र पाकिस्तान की मांग कब उठाई?

   a. 1938 में   b. 1940 में   c. 1942 में   d. 1947 में

2. मुस्लिम लीग द्वारा सीधी कार्रवाई दिवस कब मनाया गया?

   a. 16 अगस्त 1942 में   b. 16 अगस्त 1946 में

   c. 16 अगस्त 1944 में   d. 16 अगस्त 1948 में

3. कैबिनेट मिशन (1946) में कितने सदस्य थे?

   a. 2   b. 3   c. 4   d. 5

4. सीमांत गांधी किसे कहा जाता है?

   a. मोहम्मद जिन्ना   b. खान अब्दुल गफ्फार खान

   c. रहमत अली   d. मोहम्मद इकबाल

5. करो या मरो का नारा महात्मा गांधी ने किस आंदोलन में दिए थे?

   a .असहयोग आंदोलन   b. भारत छोड़ो आंदोलन

   c. चंपारण आंदोलन   d. सविनय अवज्ञा आंदोलन

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. लखनऊ समझौता से आप क्या समझते हैं?

7. कैबिनेट मिशन भारत क्यों आए थे?

8. भारत छोड़ो आंदोलन की व्याख्या करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

9. ब्रिटिश भारत का क्यों किया गया? कारण स्पष्ट करें।

10. बंटवारे के समय औरतों के क्या अनुभव रहे?

© JCERT not to be republished